डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 16.09.2020

व्याख्यान संख्या-59 (कुल सं. 95)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

चटक न छाँड़त घटत हू सज्जन नेह गँभीर।

फीको परै न बरु फटै रँग्यो चोल रँग चीर।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग एक वास्तविक प्रेमी के हृदय की उदारता, विशालता एवं दृढ़ता के वर्णन का है।

कवि का कहना है कि सज्जनों का गंभीर स्नेह घटते हुए भी चटक नहीं छोड़ता। तात्पर्य यह है कि सज्जनों का गहरा प्रेम हीन अवस्था को प्राप्त होते हुए भी अर्थात् निर्धन, निर्बल होते हुए भी प्रेम की उत्कृष्टता नहीं छोड़ता अर्थात् मित्र अथवा प्रेमी या प्रेमिका की हीन दशा में भी सज्जनों का प्रेम उस पर वैसा ही उत्कर्षपूर्ण एवं गहरा बना रहता है, जैसे कि चोल के रंग से रँगा हुआ कपड़ा फीका नहीं पड़ता, भले ही फट क्यों न जाए।

प्रस्तुत प्रसंग में 'चोल' शब्द विशेष ध्यातव्य है। 'चोल' का दूसरा नाम 'मँजीठा' है। यह एक प्रकार की लकड़ी अथवा लता है जिसकी जड़ एवं डंठल को उबालकर लाल रंग निकाला जाता है। इस रंग में लाख (लाह) का कुछ रस तथा तेल इत्यादि मिलाकर पक्का रंग बनाया जाता है। इसको चोल का रंग कहते हैं। इसमें तेल का भी मेल होता है, इसीलिए कवि ने दोहे में प्रीति, प्रेम अथवा राग आदि शब्दों का प्रयोग न करके 'नेह' अर्थात् स्नेह शब्द का प्रयोग किया है, जिसका एक अर्थ जहाँ प्रेम है वहीं दूसरा अर्थ तेल भी होता है। कवि के कहने का तात्पर्य स्पष्ट है कि जिस प्रकार चोल के रंग से रँगा हुआ वस्त्र भले

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

ही फट जाए परंतु उसका रंग फीका नहीं पड़ता, उसी प्रकार सज्जन अथवा उनके प्रेम का पात्र कैसी भी दशा को क्यों न प्राप्त हो जाए, परंतु उनका प्रेम अपनी उत्कृष्टता को नहीं त्यागता, बल्कि यथावत् ही बना रहता है।

प्रस्तुत दोहे में प्रतिवस्तूपमा अलंकार है। प्रतिवस्तूपमा एक सादृश्यमूलक अलंकार है। जहाँ उपमेय एवं उपमान वाक्यों का एक ही साधारण धर्म शब्दान्तर से कथित हो, वहाँ प्रतिवस्तूपमा अलंकार होता है। प्रतिवस्तूपमा का अर्थ है प्रत्येक वाक्य (प्रति वस्तु) में उपमा (सादृश्य) अर्थात् प्रत्येक वाक्य में सादृश्य। प्रस्तुत दोहे में चोल के रंग और सज्जन के मन से संबंधित प्रत्येक शब्दों के संदर्भ में सादृश्य होने से प्रतिवस्तूपमा अलंकार है। इसमें उपमेय के रूप में सज्जन का प्रेम है और उपमान के रूप में चोल रंग से रँगा वस्त्र। दोनों वाक्यों का एक ही साधारण धर्म है फीका नहीं पड़ना, जो कि परस्पर एक दूसरे के द्वारा कथित होता है।